Vagdhara: A Multilingual Peer Reviewed Research Journal (ISSN 2839-6197)
Vol. 1 No. 3 (2026): April-June; Website: https://vagdhara.in/index.php

वांचो जनजातीय लोकसाहित्य में अभिव्यक्त गोदना परंपरा
एक सांस्कृतिक अध्ययन

***मो. जोहुरुल इस्लाम**

***अतिथि सहायक आचार्य, इन्दिरा गाँधी शासकीय महाविद्यालय, तेजू, अरुणाचल प्रदेश**

Received: August 30, 2026 *Accepted: November 07, 2026*

शोध सार

गोदना भारत की प्राचीन परम्पराओं में से एक है। विश्व में यह आदिवासी संस्कृति का एक अंग माना जाता है, इसका शाब्दिक अर्थ किसी सतह को बार-बार छेदना अर्थात् अनेक बार छिद्रित करना है। गोदना को अलग-अलग प्रान्तों में अलग-अलग नाम से संबोधित किया जाता है। वांचो जनजाति में गोदना को 'हू' (Hu) या 'चू' (Chu) कहा जाता है। इस समाज में गोदना की परंपरा बहुत पुरानी है। यह इनकी पहचान तथा प्राचीन परंपरा के रूप में स्थित है। वांचो लोकसाहित्य में गोदना की लंबी परंपरा देखने को मिलती है ,जब युवती किशोरावस्था में होती है तो पहला गोदना नाभि के नीचे बनाया जाता है इससे यह ज्ञात होता है की लड़की अब युवा हो चुकी है। इसी प्रकार पुरुषों में भी गोदना गुदवाना एक प्रकार से वीर और शौर्य का प्रतीक है। समाज में जब कोई युद्ध से जीतकर सिर काटकर गाँव में लाता था तो पुरुष पहला गोदना अपने गालों पर बनवाते थे जिसे शौर्य एवं वीरता का प्रतीक माना जाता था। वांचो समाज में गोदना उनकी संस्कृति का एक अंग है। विवाह के दौरान भी युवती गोदना गुदवाया करती थी, यह दिन त्योहार की तरह गाँव भर में मनाया जाता था। वांचो समुदाय में गोदना मात्र शारीरिक अलंकरण का साधन नहीं, अपितु पुरुषों में सामाजिक प्रतिष्ठा जनजातीय अस्मिता का प्रतीक है।

बीज शब्द- जनजाति वांचो, सांस्कृतिक, गोदना, वांगहम, वांगसा, वांगसू, वांगपन, थून हु, डिंग हु, तोक हु, मुंड शिकार, सौन्दर्य, युद्ध, पिंडली।

अरुणाचल प्रदेश बहुजनजातीय प्रदेश है। यहाँ कई जनजातियाँ और उपजनजातियाँ निवास करती हैं। जो अपनी विशिष्ट संस्कृति के लिए जाना जाता है। आदी, आपातानी, न्यिशी, गालो, शेरदुकपेन, मिश्मी, सिंग्फो, खामती, नोकते, वांचो, तांगसा आदि यहाँ की प्रमुख जनजातियाँ हैं। इन जनजातियों और उपजनजातियों का अपना विशेष सामाजिक परिवेश है जिसमें वे जीवन यापन करती हैं। यही परिवेश इन्हें एक-दूसरे से अलग भी रखता है।

राज्य की विभिन्न जनजातियों का उल्लेख करते हुए डॉ. पारुल चन्द्र दत्ता लिखती हैं- "राज्य की जनजातियाँ हैं: पूर्व कामेंग जिले के मोनपा, शेरदुकपेन,आका, खोवा, मिजी, बांगनी और सुलुंग, पूर्व सुबनसिरी जिले के न्यीशी, आपातानी, हिल मीरी, तागिन, सुलुंग और मीकिर, अविभाजित सियांग जिले के आदी, मेम्बा, खामबा और मिसींग, मिशमी, खामती, सिंगफो, जाखरींग, मिसींग, आदी, तिब्बती और चकमा अविभाजित लोहित जिले के और तिरप जिले के नोकते, वांचो, तांगसा, सिंगफो और लीसु।"[1]

राज्य के सामाजिक परिवेश की पुष्टि करते हुए डॉ. अरुण कुमार पाण्डेय लिखते हैं – "अरुणाचल प्रदेश का जनजातीय समाज अपने वैविध्य के बावजूद कुछ परम्पराओं और सामाजिक संस्थाओं की दृष्टि से एकरूप है। इनके जीवन की प्रत्येक क्रिया पूर्व निर्धारित सामाजिक मान्यताओं, रीति-रिवाजों के द्वारा संचालित है। यहाँ सभी जनजातियों के अपने समाज द्वारा बनाए गए विशेष नियम हैं और इसका सम्मान प्रत्येक व्यक्ति को करना पड़ता है।"[2]

वांचो जनजाति अरुणाचल प्रदेश की प्रमुख जनजातियों में से एक है। इस जनजाति के लोग तिराप, लोंडिंग, में निवास करते हैं। इस जनजाति की संस्कृति, परंपरा, रीति-रिवाज आदि अन्य समुदायों से नितांत भिन्न हैं। वांचो समाज चार वर्गों में विभाजित है जो वैवाहिक सम्बन्धों पर आधारित है। यह चार वर्ग इस प्रकार हैं- वांगहम, वांगसा, वांगसू और वांगपन। वांगहम सबसे श्रेष्ठ वर्ग है। इसमें 'चीफ' (राजा) और उनके परिवार को रखा गया है। इसे समाज में विशेषाधिकार प्राप्त है। सामान्य जन को वांगपन में रखा गया है। वांगसा और वांगसू अंतर्वर्गीय वैवाहिक सम्बन्धों का प्रतिफल है। वांगहम पिता तथा वांगपन माता से उत्पन्न संतान के वंशजों को वांगसा में रखा गया है। जबकि वांगपन पुरुष और वांगहम महिला के बीच वैवाहिक

संबंध होने के उपरांत उत्पन्न संतान के वंशजों को वांगसू कहा जाता है। वांगचो समाज में वांगसा को दूसरे स्थान तथा वांगसु को तीसरी कोटी में रखा गया है, वांगचो समाज में चीफ को विशेषाधिकार प्राप्त है। चीफ की संतान और उनका परिवार जन्मजात वांगहम होते हैं।

अरुणाचल प्रदेश का वांचो जनजातीय समुदाय अपनी समृद्ध एवं विशिष्ट गोदना परंपरा के लिए प्रसिद्ध है। इनके लोकसाहित्य में गोदना परंपरा किस प्रकार इनकी लोकसंस्कृति के साथ जुड़ी हुआ है यह कथा अत्यंत रोचक एवं प्रभावशाली है। लोकसाहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे लोकगीत, लोक कथा, लोक गाथा में भी गोदना परंपरा दृष्टिगत होती है।

" भारत में ऐसे कई जनजातीय समुदाय में गोदना का चलन है ग्रामीण समाज में भी गुदना गुदवाने की परंपरा है। गोदना कबिलाई संस्कृति की देन है। समाज में गोदना एक अनिवार्य अलंकरण और पहचान बन गया है।"[3] इसी प्रकार अरुणाचल प्रदेश के कुछ जनजातीय समुदाय में भी गोदना प्राचीन काल से देखने को मिलता है। गोदना परंपरा कब और कैसे शुरू हुई, यह बता पाना अत्यंत कठिन है। अरुणाचल प्रदेश के नोक्टे , अपातानी और वांचो समुदायों में गोदना की परंपरा देखने को मिलती है। शरीर पर गुदने का प्रचलन कब हुआ ? यह कह पाना मुश्किल है। फिर भी शरीर को केनवास बनाने की कल्पना कितनी रोमांच रही होगी। इसके लिए आज से पाँच हजार वर्ष पूर्व के बुद्धि सम्पन्न आदि मानव जिसे होमोसेपियन्स कहा जाता है, को जिम्मेदार माना जा सकता है। इसका पता जनजातियों के मिथकों एवं लोकसाहित्य से प्राप्त होता है। मध्यप्रदेश की गोंड जनजाति की मिथक कथा इस विषय पर ध्यान आकर्षित करती है जो अधिक प्रामाणिक और प्रिमीटिव है। "गोदना केवल शरीर का स्थायी चित्रित अलंकार ही नहीं है वह जातीय पहचान, बीमारियों से बचाने, विषैले कीड़ों के डंस से बचने, जादुई प्रभावों और प्रकोपों को अनुकूल करने के प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित शरीर आलेखन के लिए भी किए जाते हैं।"[4] वांचो जनजाति में स्त्री और पुरुष दोनों ही गोदना गुदवाते हैं। इस समाज में युवती जब किशोरावस्था से निकल कर यौवनागमन में प्रवेश करती है तो पहला गोदना गुदवाती है। पहला गोदना उनके यौवनागमन का प्रतीक है।

"वांचो समुदाय में गोदना मात्र शारीरिक अलंकरण का साधन नहीं, अपितु पुरुषों में सामाजिक प्रतिष्ठा जनजातीय असिम्ता का प्रतीक है। व्यक्तिगत सजावट के लिए उनके पास विभिन्न प्रकार के आभूषण होते हैं। पुरुषों और महिलाओं का टेटु बनवाना समाज में उनकी स्थिति दिखाने के लिए महत्वपूर्ण था।"[5] पूर्व में गोदना वांचो समुदाय के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। गोदना महिलाओं के लिए उनके जीवन के विभिन्न चरणों को दर्शाता था और पुरुषों के लिए सामाजिक स्थिति, वीरता एवं उपलब्धियों को दिखाता था। "पुरुष अपने चेहरे, गर्दन, छाती और पिंडली पर गोदना बनवाते थे। महिलाएँ छाती, हाथ, नाभी, जाँघ और पिंडली पर टेटु बनवाती हैं, चेहरे पर टेटु बनवाना पुरुषों का विशेषाधिकार है। किन्तु विशेषाधिकारी महिलाएँ चेहरे पर टेटु नहीं बनवातीं। पुरुष और महिलाओं में गोदना के डिजाइन भी भिन्न होते हैं।"[6] जिसमे वांगसू और वांगपन की सामाजिक स्थिति को दर्शाने के लिए अलग-अलग आकार होते हैं। वांगपन समुदाय की महिलाओं का गोदना घुटने के ठीक नीचे तक होता था , जबकि वांगसा और वांगसू समुदाय की महिलाओं के गोदना टखने तक होते हैं।

गोदना बनवाने को स्थानीय रूप से हू (Hu) या चू (Chu) कहा जाता है। शरीर के विभिन्न हिस्सों पर बने गोदना के विशेष नाम होते हैं, जैसे चेहरे पर इसे 'थुन हू' (thun hu), 'गर्दन पर डिंग हू' (ding hu) या चाखू हू (Chakhu hu); पीठ पर तोक हू (tok hu); नाभि पर चुंग हू (Chung hu) या चुम हू (Chum hu); जांघ पर, बेताम हू (betam hu) और पैर की पिंडली पर ची चिन हू (Chi Chin hu) कहा जाता है। स्थानों के आधार पर गोदना के नाम में भिन्नता होती है वांचो में गोदना के डिज़ाइनों (आकृतियों) की सूची परिणामस्वरूप समृद्ध और विविध है, और यह समाज में एक व्यक्ति के पद और स्थिति के साथ बदलती रहती है। एक प्रमुख (मुखिया) के परिवार का सदस्य, उदाहरण के लिए, विस्तृत जटिल पैटर्न प्रदर्शित करता है जबकि एक आम आदमी को सबसे सरल संभव डिज़ाइन से संतुष्ट होना पड़ता है।

वांचो लोकसाहित्य में गोदना गुदवाना एक प्रकार से सुंदरता का प्रतीक है इसके साथ-साथ लोक कथाओं में, घुटनों में, गोदना परंपरा कैसे शुरु हुई इसका उल्लेख भी कथा में इस प्रकार हुआ है -"एक गाँव में दो लड़कियाँ बहुत गहरी सहेलियाँ थीं। उनमें से एक के माता-पिता जीवित थे, जबकि दूसरी के माता-पिता की मृत्यु हो चुकी थी। एक दिन अनाथ लड़की अपनी सहेली को छोड़कर दूसरे गाँव में रहने चली गई। क्योंकि वहाँ उसकी देखभाल करने के लिए कोई नहीं था, इसलिए उसके पैरों पर गोदना बनवा दिया गया। जब वह बड़ी हुई, तो सान उसे सुंदर मानते थे। लेकिन उसकी सहेली, जो घर पर ही रही, वह इतनी सुंदर नहीं दिखती थी। तब से माता-पिता अपनी बेटियों के पैरों पर गोदना बनवाते आ रहे हैं।"[7]

महिलाओं को उनके जीवन में चार बार गोदना गोदा जाता था। पहला गोदना नाभि पर चुंग हू (Chung hu) या चुंगसु (Chungsu) होता है। लड़कियाँ जब लगभाग 10 वर्ष की आयु में पहुँचती थीं तो नाभि पर (X) चिह्न के आकार का पहला गोदना बनाया जाता था। यह इस बात की घोषणा होती थी कि वे अब बड़ी हो गई हैं, तथा 'खुसा'(स्कर्ट) पहनना शुरू कर सकती हैं। इस X चिह्न में दो तीन रेखाएँ होती हैं। जब वे यौवन की आयु में पहुँचती हैं तो दूसरा गोदना पैर की पिंडली पर बनाया जाता है जिसे "चिथाम हुह्तु कहा जाता है। गाँव की परंपरा में चिथाम हुह्तु का अर्थ यह माना जाता था कि लड़की बचपन से निकलकर अब जवान हो गई है। चिथाम हुह्तु में लड़की की पिंडली पर गोदना (टैटू) बनाया जाता था। गोदना करवाने के बाद लड़की को जवान माना जाता था। ऐसे समय में लड़की के गोदना करवाने के लिए घर में बड़े त्योहार की तरह तैयारी की जाती थी। लड़की की माँ के जितने भी रिश्तेदार होते थे, उन सभी को बुलाया जाता था। रिश्तेदारों को बुलाने जाते समय उनके घर में जाकर खाना और मांस खाया जाता था

तथा सभी को अपने घर आने का निमंत्रण दिया जाता था। जब सभी रिश्तेदार घर पर आते थे, तब लड़की के घर में भैंस और सूअर का मांस बनाया जाता था और सभी रिश्तेदारों को भोजन कराया जाता था। इस प्रकार यह हमारे गाँव की एक महत्वपूर्ण रीति-रिवाज और परंपरा थी।इस त्योहार के मनाए जाने से पूरे गाँव को पता चल जाता था कि वह लड़की अब जवान हो गई है। इस प्रकार चिथाम हुह्तु केवल गोदना बनाने की परंपरा नहीं थी, बल्कि यह लड़की के बचपन से युवावस्था में प्रवेश करने का एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक संस्कार माना जाता था। पिंडली पर गोदना बनवाते समय लोकगीत इस प्रकार गाए जाते हैं -

"चिथाम हुह्तु जे निंगले नोपोंग हुह्तु चांग पु,
चिथाम हुह्तु जे निंगले नोवचा खो डोई अन ना ले
हुह्तु हाम जा चिथाम हुह्तु जु मा जीन अन्तो ले
हुहूआम तो न्याक ला लेउ पु आ हाम जा"[8]

तीसरा गोदना जाँघ पर या घुटने से ऊपर बनाया जाता था और इसमें घुटने के नीचे की ओर जाने वाली समानान्तर रेखाएँ होती हैं। जिसे चिकुह हुह्तु कहते हैं, इस गोदना को बनाने का समय अलग-अलग गांवों में भिन्न-भिन्न होता है।

कुछ गाँवो में यह गोदना लड़की के विवाह के पश्चात् जब ससुराल जाती है तब यह गोदना बनाया जाता था या पहली बार जब गर्भधारण करती थी। विवाह के समय गोदना गुदने का उल्लेख लोकगीतों में इस प्रकार हुआ है-

"चिकुह हुह्तु जे निंगले,
चिकुह हुह्तु निह माखे नोवचा तोइहाम तो पाओ तो पु।
चिकुह हुह्तु जु मा चू पांगवाई नोवचा काको हामखा
अन्तोले नोवचा हुहूआम तो न्याक हाम ताइपु,
अन्तोले चुआक चा आम मेई चू सोई लाई हाट ला ले डोई हाम जा।
नोवचा आम हुम मा पु आंग,
उबी काको हाम खा नू ना ताई ही नोव ले
असोह ला ले लोइलांग वाकलांग ले बांग ला ले पु आ हाम जा।
हाले नोवचा हाम खा मा पु आ ले साह फाई मा।
हाजा माखे तोइहाम तो पाओ तो।
अन्तोले चिह तो जून ला ले हुना हुनोव,
हून हुंये ले तोइहाम तो जून ला ले अजा निंग पाम तो आई।
हाजा माखे नोवचा तोइहाम तो नाम लाम मांग डो हाम जा।"[9]

प्रस्तुत लोकगीतों के माध्यम से विवाह के दौरान घुटने में गोदना के पश्चात् भोज का आयोजन तथा समुदाय में इस संस्कार को कैसे निष्पन्न करते हैं वह पता चलता है। लड़की के घुटने में गोदना बनाने के दिन को उत्सव के रूप में मनाया जाता था। इस अवसर पर लड़की के घर में सभी रिश्तेदारों को बुलाया जाता था। जिस दिन लड़की के घुटने में गोदना बनाते हैं उस दिन सूअर और भैंस का मांस सभी रिश्तेदारों को खिलाया जाता था। इस अवसर पर लड़की की दीदी, बहन, चाची, चाचा, मामा, मामी, साथी आदि सभी रिश्तेदारों को घर में इकट्ठा करके उत्सव मनाया जाता था। रात होते ही लड़की को ससुराल भेज दिया जाता था। लड़की को ससुराल तक पहुँचाने के लिए केवल महिलाओं को ही जाने की अनुमति होती थी। पुरुष वर्ग के लोग ससुराल नहीं जाते। दीदी, बहन, चाची, मौसी, बुआ और माँ आदि महिलाएँ उसे ससुराल तक छोड़ती हैं। उस रात वे वहीं रुकते हैं अगली सुबह वापस घर लौट आते हैं। इसके पश्चात् लड़की अपने ससुराल में सदैव के लिए रहने लगती थी। इस प्रकार घुटने में गोदना बनाने का यह रीति-रिवाज वांचो जनजाति के गाँव में एक प्रकार से स्त्री-विवाह परंपरा मानी जाती थी।

चौथा और अंतिम गोदना पति के घर पर गर्भावस्था के सातवें महीने या पहले बच्चे के जन्म के बाद बनाया जाता था यह गोदना 'M' चिह्न का होता है जिसमें तीन रेखाएँ स्तनों के ऊपर से आकर बीच में 'I' दंड में आकर मिलता है। यह गोदना विवाहित तथा यौन क्रिया को भी प्रदर्शित करता है।

प्रत्येक गाँवों में ऐसी महिलाएँ होती हैं जो गोदना बनाने की कला को जानती हैं। "1900 ई. के दशक में मिनतोंग नामक गाँव की न्योम वांचा और न्यालाई वांगपन दोनों महिलाएँ इस कला को अच्छी तरह से जानती थीं।"[10]

पुरुषों में गोदना गुदवाने की परंपरा अधिक गंभीर विषय है। पुरुष वर्ग में गोदना युद्ध से संबंध रखता है। वही लोग इसकी आकांक्षा कर सकते थे जो दुश्मनों के सिर काटकर उन्हें अपने विजय के प्रतीक के रूप में गाँव में लाते थे ताकि गाँव में समृद्धि आए। इसके साथ ही समाज में उनका सम्मान

और भी बढ़ जाता था। लड़कियाँ इन वीरता के प्रतीक वाले पुरुषों को अपनी पहली पसंद बनाती थीं। पुरुष वर्ग के लोग आँखों के चारों ओर भारी चश्मा जैसा घेरा तथा मुंड तक चौड़ी रेखाएँ बनाते थे। छाती, पीठ, बाजुओं और पेट भर भी अन्य आकार के गोदना बनाते थे। चोंगखाव गाँव निवासी श्री जातो वांगहम कहते हैं कि "पुरुषों का हैड हंटिंग (शत्रु का सिर काटने की प्रथा) में उनकी वीरता को परिभाषित करता है। यदि पुरुष एक शत्रु का सिर काटता है तो उसके दाहिने गाल पर टैटू बनाया जाता था , यदि वह दूसरे शत्रु का सिर काटने में सफल होता है तब बाएँ गाल पर टैटू बनाया जाता है और यदि तीसरे शत्रु का सिर काटता है तो छाती पर टैटू बनाया जाता है चौथा सिर काटने पर कंधे की हड्डी (scapula) पर टैटू बनाया जाता है। इस प्रकार उनकी वीरता के अनुसार टैटू बढ़ते जाते हैं।"[11]

आज भी प्रत्येक गाँव में ऐसे नायक जीवित हैं जिन्होने इस साहसिक मुंड-शिकार अभियानों में बढ़-चढ़कर भाग लिया था। उनके चेहरों, शरीरों और पीठ पर उकेरे गए टैटू आज भी उस दौर की गवाही देते हैं। जब वे दुश्मन का सिर काट कर एक गौरवमयी प्रतीक इनाम के रूप में गाँव लौटते थे, तो पूरा गाँव हर्ष, उल्लास और उत्सव में डूब जाता था। सम्पूर्ण ग्रामीण कबीला ढोल, नगाड़ों और गीतों के साथ गाँव की सीमा पर इन वीरों का स्वागत करने में उमड़ पड़ता था। कटे हुए सिर को लम्बे बांस के शीर्ष पर गर्व से टाँगकर, पूरे सम्मान के साथ कबीले के मुख्य प्रशासनिक भवन तक एक भव्य जुलूस निकाला जाता था। वहाँ उसे सभी के सम्मुख प्रदर्शित किया जाता था ताकि लोग विस्मय से देख सके और पूछ सके "वह वीर कौन है जिसने इस मस्तक को धड़ से अलग अलग किया? इसके बाद उस महानायक का नाम पूरे कबीले में गर्व से गूंजने लगता था।"[12] युवा-युवतियाँ उस पराक्रमी पुरुष की एक झलक पाने के लिए लालायित रहती थी।

वांचो समुदाय में जो व्यक्ति युद्ध में शत्रु को पराजित करता था, उसे नॉवमाई अर्थात शक्तिशाली और वीर पुरुष माना जाता था। "नॉवमाई की पहचान के लिए शरीर के कुछ विशेष भागों, जैसे चेहरे, कंधे और गर्दन पर पारंपरिक गोदना बनाया जाता था।"[13] जिस दिन सिर काट कर गाँव में लाया जाता है उस दिन लोग खुशी और प्रसन्न के लिए 'गंगतांग' नामक त्योहार मनाते हैं। इस दिन दिव्या गंगतांग नामक गीत के साथ-साथ नृत्य किया जाता है। लोक गीत की पंक्तियाँ यहाँ दृष्टव्य हैं-

"फोन- ए लैंग ओ
कान-दिन-लैंग ओ
होम-दिन लैंग ओ
नि-पाऊ थान-पु
ने-ए-ए-ए- हे-ए-ए
खो-पाउ- थान पु
ने-ए-ए-ए- हे-ए-ए
सित पाऊ थान पु
तांग पाऊ थान पु
हो -ए-ए-ए- हे-ए-ए
खून-पाऊ पु
हो -ए-ए-ए- हे-ए-ए"[14]

यह गीत वर्णन करता है कि वीर पुरुष ने सिर को कैसे काटा, उसे कहा से लाया गया और किस समय उसका शिकार किया गया, वे इस गीत के माध्यम से अपनी वीरता और पराक्रम का भी बखान करते हैं।

अंतर-जनजातीय युद्धों के दिन अब नहीं रहे लेकिन फिर भी गोदना से जुड़ा सामाजिक मूल्य बना हुआ है। इसलिए सजावट (टैटू) हासिल करने के लिए नकली लड़ाइयों का मंचन किया जाता है। एल्विन लिखते हैं- "वांचो (Wanchos) लोगों में अभी भी किसी वंशानुगत दुश्मन के खेतों में छिपाई गई एक लकड़ी के पुतले को तैयार करने की प्रथा है। युवा पुरुष उसका शिकार करते हैं और उसे 'मार' देते हैं, और जब वे विजय प्राप्त कर लौटते हैं, तो उन्हें विवाह की एक आवश्यक प्रारंभिक शर्त के रूप में टैटू करवाया जा सकता है'। लेकिन विचार बदल रहे हैं और कला तथा इसके प्रति प्रेम, प्रेरणा के बुनियादी स्रोत से वंचित होने के कारण, निश्चित रूप से समाप्त होने वाला है। जनजाति का शिक्षित वर्ग आजकल इसे अनुकूल दृष्टि से नहीं देखता है।"[15]

वांचो जनजाति में गोदना एक प्रथा के रूप में थी जो आज हमें केवल बूढ़े पुरुषों और महिलाओं में मिलती है जिन पर गोदना बना हुआ है। अब इस समुदाय में मुंड-शिकार एवं अंतर-युद्ध नहीं होते हैं जिसके चलते आज वांचो समाज में यह गोदना प्रथा भी लुप्त होने की कगार पर है। वांचो की वर्तमान पीढ़ी अपने शरीर में गोदना गुदवाना आवश्यक महसूस नहीं करती है। चाहे वह अपनी सुंदरता बढ़ाने के लिए हो या अपनी वीरता का प्रतीक हो। पूर्व में वांचो समुदाय के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था साथ ही महिलाओं के जीवन की विभिन्न स्थितियों को दर्शाता था।

संदर्भ

1. Dhar, Bibhash and Coomar, Palash Chandra, *Tribes of Arunachal Pradesh: History and Culture, page no.*- 136.
2. पाण्डेय, अरुण कुमार, *गालो जनजाति की लोक संस्कृति: पहचान और प्रवाह,* पृ. सं- 28
3. निरगुणे, वसंत, *लोक संस्कृति*, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृ. सं- 132
4. वही
5. Vattoth, Thomas, *The Wanchos in transition*, page no. -41
6. वही
7. Elwin, Varrier, *Myths of the Northeast Frontier of India,* page no. 221
8. स्वयं संकलित , बोलाक वांगसा, गाँव- लोंगखव, लोंगडिंग, दिनांक- 12/07/2026
9. वहीं
10. Vattoth, Thomas, *The Wanchos in transition*, page no. 159
11. वही
12. वही
13. साक्षात्कार, बोलाक वांगसा, गाँव- लोंगखव, लोंगडिंग, दिनांक- 12/07/2026
14. Dutta, Parul, *The Wanchos*, Director of Research, Government of Arunachal Pradesh, page no- 90
15. वही

■■■